नयी तालीम के केंद्र — आनंद निकेतन
एक विहंगावलोकन

ऋषभ कुमार मिश्रा*

नयी तालीम भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में गाँधीजी के समाज दर्शन का शिक्षणशास्त्रीय संस्करण है। बुनियादी शिक्षा योजना (1937) से लेकर आज तक इसके स्वरूप, प्रासंगिकता और उपादेयता पर चर्चा होती रहती है। प्रत्येक नीतिगत दस्तावेज़ में किसी-न-किसी रूप में इसका उल्लेख किया जाता है। इसे स्वराज के मार्ग, सत्य और अहिंसक समाज के निर्माण का औज़ार और विकास, शांति व सह-अस्तित्व के उपकरण के रूप में रेखांकित किया गया है। इसी पृष्ठभूमि में यह लेख नयी तालीम पद्धति पर आधारित आनंद निकेतन विद्यालय के अवलोकन और आख्यानों के आधार पर उद्घाटित करता है कि किस प्रकार से यहाँ शिक्षण-अधिगम की संस्कृति एक संपोषणीय पारिस्थितिकी में सशक्त विद्यार्थी और सशक्त शिक्षकों के साथ जीवंत होती है।

नयी तालीम महात्मा गाँधी के व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अनुभवों की शिक्षणशास्त्रीय परिणति है, जो न केवल औपनिवेशिक शिक्षा का विकल्प थी, बल्कि स्वराज और स्वावलंबन वृहद् लक्ष्यों को केंद्र में रखकर एक पूर्ण भारतीय शिक्षण पद्धति का प्रतिपादन भी करती है (कुमार, 1999)। इसके मूल में सत्य और अहिंसक समाज के निर्माण की परिकल्पना है (शिवदत्त, 2012)। इसी कारण मार्जरी साइक्स इसे आधुनिक विश्व को गाँधीजी की देन मानती हैं। वे इसे विकास, शांति व सह-अस्तित्व के उपकरण के रूप में रेखांकित करती हैं (साइक्स, 1993)। इस पद्धति में 'मस्तिष्क को हाथ के काम द्वारा शिक्षा मिलनी चाहिए' की मान्यता के साथ हृदय-हाथ-मस्तिष्क के तालमेल को मज़बूत करने के लिए हस्तशिल्प को केंद्र में रखा गया है। आधुनिक निर्माणवादी सिद्धांतों के सापेक्ष यदि हस्तशिल्प आधारित सीखने की गतिविधियों की व्याख्या करें तो ये 'मौलिक गतिविधियाँ' हैं। ब्रूनर, रोगोफ और लावे जैसे मनोवैज्ञानिक इस तरह की गतिविधियों को सीखने की आदर्श स्थिति मानते हैं। वस्तुत: नयी तालीम में हस्तशिल्प शिक्षा का माध्यम नहीं, बल्कि शिक्षा का मूल है। भारतीय समाज के संदर्भ में हस्तशिल्प को सीखने की

* *सहायक प्रोफ़ेसर*, महात्मा गाँधी अतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442005
(इसी शीर्षक से एक शोध पत्र न्यूपा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पढ़ा गया था।)

Chapter 7.indd 68 10/4/2018 4:57:18 PM

प्रक्रिया के केंद्र में रखना सामाजिक रूपांतरण की संभावना को चरितार्थ करता है। इसके द्वारा वंचित तबकों के ज्ञान और कुशलताएँ न केवल मुख्यधारा में सीखने की वैध विषय-वस्तु की तरह स्वीकार किए जाते हैं, बल्कि भारत की सामाजिक संरचना में विभेद के तत्वों, विशेषकर जाति व्यवस्था के प्रति आलोचनात्मक विवेक की संभावना को भी लिए हुए हैं (कुमार, 1999)। यह शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा द्वारा स्वावलंबन को एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में स्थापित करती है। यही नहीं, श्रम विभाजन और शारीरिक श्रमप्रधान कार्यों को निचली जातियों से जोड़कर देखने के पूर्वाग्रह को तोड़ने के लिए भी श्रम की प्रतिष्ठा अनिवार्य है। नयी तालीम में मातृभाषा द्वारा शिक्षण करते हुए स्वावलंबन, श्रम की प्रतिष्ठा, सहअस्तित्व, समानता जैसे मूल्यों का केवल उपदेश नहीं दिया जाता, बल्कि उसे अपनाया जाता है। प्राय: नयी तालीम को आधुनिक और प्रगतिशील शिक्षा के विपरीत देखा जाता है। यदि इसका सम्यक निर्वचन किया जाए तो यह परंपरा और आधुनिकता के बीच सार्थक संवाद का मार्ग खोलती है। समुदाय के दैनंदिन ज्ञान और अभ्यास को वैज्ञानिक ज्ञान से जोड़ती है। इसमें न तो समुदाय का ज्ञान और कुशलताएँ सर्वोपरि हैं जो कि आलोचना से परे हैं और न ही विषय ज्ञान के रूप में व्यवस्थित ज्ञान एकमात्र वैध अंतर्वस्तु है। इसमें दुनिया को देखने की दृष्टि के विकास के लिए उन अभ्यासों और प्रक्रियाओं को जानने का साधन बनाया जाता है, जिनके प्रति दैनिक जीवन का बड़ा हिस्सा समर्पित है और जिनसे हमारा विचार, कर्म और व्यवहार निर्धारित होते हैं। 'हाथ से काम' में केवल यांत्रिकता और पुनरावृत्ति नहीं होती, बल्कि इसका सृजनात्मकता और नवाचार से भी गहरा संबंध है। इस सैद्धांतिक पृष्ठभूमि में यह लेख आनंद निकेतन विद्यालय के अवलोकन आधारित आख्यानों के माध्यम से स्पष्ट करता है कि किस प्रकार से यहाँ शिक्षण-अधिगम की संस्कृति एक संपोषणीय पारिस्थितिकी में सशक्त विद्यार्थी और सशक्त शिक्षकों के साथ जीवंत होती है।

संपोषणीय पारिस्थितिकी वाला विद्यालय (आनंद निकेतन)

इस विद्यालय को 'प्रकृति की गोद' में बसा जैसे अतिरंजित विशेषण देकर विशिष्ट और वैकल्पिक बनाने के बदले कहूँगा कि यह विद्यालय, सेवाग्राम में चारों तरफ़ कंक्रीट के फैलते जंगल के बीच स्थित एक संपोषणीय पारिस्थितिकी वाला विद्यालय है। आज भी सेवाग्राम आश्रम और यह विद्यालय अधिकांशत: मिट्टी की दीवारों और खैपरल पर ही टिका हुआ है। जल की समस्या और गर्मी की अधिकता सेवाग्राम सहित विदर्भ क्षेत्र की समस्या है। बावजूद इसके परिसर में पानी से लबालब कुएँ हैं जो विद्यालय और परिसर में पानी की ज़रूरत को पूरा करते हैं। पीपल और बरगद के विशालकाय वृक्ष हैं जो अपनी छाँव में परिसर को समेटे हुए हैं। बताते चलें कि आनंद निकेतन विद्यालय कोई संरक्षित इमारत नहीं है, एक सामान्य विद्यालय की तरह यहाँ रोज़ बच्चे आते हैं, कक्षाएँ चलती हैं। अनेक गतिविधियाँ होती हैं। विद्यालय का आरंभ शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा कक्षा की सफ़ाई से होता है।

झाड़ू मारना और कचरे का व्यवस्थित तरीके से निस्तारण प्रार्थना से पूर्व शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा किया जाने वाला अभ्यास है। भवन की वार्षिक मरम्मत का कार्य ग्रीष्मावकाश में किया जाता है। भूमि को पक्के फ़र्श में तब्दील करने पर ज़ोर नहीं है। इस परिसर के पेड़ों पर पक्षियों का वास है, यहाँ कक्षा की मुंडेर पर चिड़िया के घोसले हैं, जो कि विद्यालय पर्यावास का हिस्सा हैं। परिसर में ही खेत उपलब्ध हैं। जल के पात्र भरे रखे हैं, न तो इनके आस-पास कीचड़ है और न ही बर्तन पर काई जमी है। ये प्रमाण हैं कि स्वास्थ्य और सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता है। प्राकृतिक जल और वर्षा के जल संचय की व्यवस्था है। यह व्यवस्था किसी बाहरी विशेषज्ञ द्वारा नहीं की गई है, बल्कि विद्यार्थियों और शिक्षकों के अधिगम अनुभव का हिस्सा है। प्रकृति के मानवीकरण का उदाहरण भी देखा जा सकता है। परिसर के केंद्र में स्थित वृक्ष को महादेव देसाई का नाम दिया गया है। जिस तत्परता के साथ विद्यालय के भवन की देख-रेख की जाती है, उसमें मज़दूर नाम की इकाई नहीं है, बल्कि शिक्षक और विद्यार्थियों ने उसे निर्मित किया है। पुराने टायर द्वारा झूले बनाना हो, रस्सियों द्वारा कूद-फाँद के खेल की व्यवस्था करनी हो, कंकरीले मैदान को कूँट-कूँट कर समतल करना हो, यह सब विद्यार्थी और शिक्षकों ने मिलकर किया है। इसी का एक उदाहरण साझा करना चाहता हूँ, एक दिन एक चिड़िया का बच्चा अपने घोसले से निकलकर कक्षा में आ गया, शिक्षक ने उस चिड़िया के बच्चे को अपने कंधे पर बैठाया और इसके बाद बच्चों सहित उसके घोसले की खोज की जाने लगी। छोटे-छोटे समूहों ने अलग-अलग कक्षाओं की मुंडेर पर बने कई घोसले खोजे। इसी तरह पेड़ की टहनियों पर भी घोसले खोजे गए। इस खोज और सूझ-बूझ के बाद बच्चे को उसके घोसले तक पहुँचाया गया। विद्यालय के उपयोग की अधिकतर सामग्री विद्यालय में बनाई जाती है। विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा लिफ़ाफ़े, रंग, फ़िनायल आदि बनाए जाते हैं। संसाधनों के पुनर्चक्रण की समुचित व्यवस्था है। उदाहरण के लिए, पेसिंल का छिलका बालटी में रखा जाता है ताकि उसका पुन: उपयोग किया जा सके।

विद्यालय की दिनचर्या — स्वावलंबन, समानता और संवेदनशीलता के बीज

विद्यालय की दैनिक गतिविधियों का प्रारंभ विद्यार्थियों और कर्मचारियों के परिसर में प्रवेश के साथ होता है। जब बच्चे विद्यार्थी के रूप में आते हैं तो उनके लिए प्रार्थना की घंटी विद्यालय के प्रारंभ होने का संकेत होती है। आनंद निकेतन विद्यालय में यह देखा गया कि अधिकांश विद्यार्थी प्रार्थना के लिए निर्धारित समय से पूर्व आते हैं, अपने बैग को यथास्थान रखकर वे अपनी-अपनी कक्षा की सफ़ाई करते हैं। इस दौरान वे यह नहीं विचारते कि किसने किया और किसने नहीं किया। जो पहले आता है, वह सफ़ाई करने लगता है। यह कार्य बिना किसी वयस्क की निगरानी के होता है। सुबह कक्षा की सफ़ाई कर रहे विद्यार्थियों के समूह से जब इस बारे में बात की गई तो उनके जवाब इस प्रकार थे — 'जैसे हम अपना घर साफ़ करते हैं, वैसे ही इसे (कक्षा को) साफ़ करते हैं।' इस काम में मज़ा आता है। हम अपनी-अपनी

जगह को न केवल साफ़ रखते हैं, बल्कि कक्षा के बाहर की भी सफ़ाई रखते हैं।'

उपर्युक्त उदाहरणों का यह आशय नहीं है कि ये विद्यार्थी समय से पूर्व विद्यालय की सफ़ाई करने के लिए आते हैं। प्रार्थना से पूर्व विद्यार्थी समूहों को खेलते और पढ़ते हुए भी देखा गया। विद्यालय के शिक्षक भी सफ़ाई के इस कार्य में प्रत्यक्ष सहभागिता करते हैं। उनके लिए कक्षा या स्टाफ़रूम की सफ़ाई दिखावे का कार्य न होकर आत्मानुशासन का हिस्सा है। सफ़ाई के कार्य में विद्यार्थी और शिक्षकों की सीधी सहभागिता महात्मा गाँधी के स्वावलंबन और समानता के मूल्य का आत्मसात्मीकरण है। यह केवल एकमात्र और विशिष्ट उदाहरण नहीं है, बल्कि इस जैसे अन्य उदाहरण कार्यानुभव और रसोई के काम में भी देखने को मिले, जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर कार्यों का निष्पादन करते हैं। आत्मानुशासन के पाठ का अद्भुत उदाहरण बालवाड़ी की कक्षा में देखने को मिला, जहाँ विद्यार्थी स्वत: ही अपनी उपस्थिति के लिए नीली गोटी और अनुपस्थिति के लिए लाल गोटी लगाते हैं। ये कार्य वे बिना किसी दबाव के पूरी ईमानदारी से करते हैं। बालवाड़ी के विद्यार्थियों के बारे में महत्वपूर्ण अवलोकन रहा कि वे जिस समान को जहाँ से उठाते थे, प्रयोग के बाद वहीं रखते थे। यह व्यवस्था भय के कारण नहीं थी, बल्कि शिक्षक और विद्यालय के बड़े बच्चों के अनुकरण का प्रभाव थी।

जेंडर विभेद को समाप्त करना औपचारिक शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। विद्यालय की गतिविधियों में न केवल जेंडर संवेदनशीलता देखने को मिली, बल्कि जेंडर विभेद को समाप्त करने के उदाहरण भी देखने को मिले। उदाहरण के लिए कार्यानुभव की कक्षाओं में, जैसे — कृषि, रसोई, सिलाई, दस्तकारी आदि में लड़के और लड़कियाँ समान रूप से हिस्सा लेते हैं। हालाँकि, ये विद्यार्थी जेंडर रोल को संज्ञान में लेते हैं, लेकिन व्यक्तिगत व्यवहार में वे दूसरे जेंडर की भूमिका के निर्वहन में संकोच नहीं करते। इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण दो कार्यानुभव में देखने को मिला। जिस समय विद्यालय का भ्रमण किया गया, उस समय विद्यार्थी खेत से खोदी गई हल्दी की सफ़ाई कर रहे थे। लड़के और लड़कियों का मिश्रित समूह बैठा था। वे अपनी-अपनी क्यारियों के उत्पादन के बारे में अवलोकनकर्ता को बता रहे थे। लड़कियों ने भी पुरुषोचित माने जाने वाले कार्य, जैसे — निराई, गुड़ाई, खुदाई के उल्लेख को एक कृषक की भूमिका के रूप में बताया, न कि लड़की की भूमिका में। ऐसे ही सिलाई के कार्यानुभव में लड़कों ने यह अभिव्यक्त किया कि दूसरे विद्यालय में पढ़ने वाले लड़के सिलाई जैसे कार्य में दक्ष नहीं हैं, लेकिन इन लड़कों ने अपने बैठने के लिए बैठक-कोश का निर्माण खुद से किया है।

प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता

एक शिक्षक ने अपने साक्षात्कार में बताया कि खेती का कार्य न केवल एक वैज्ञानिक गतिविधि के रूप में पढ़ाया जाता है, बल्कि कक्षा के बच्चों को यह भी सिखाया जाता है कि कृषि कार्य के दौरान वह विशेष रूप से ध्यान रखें कि कहीं उनके पैर तले कोई पौधा न कुचल जाए। कताई की कक्षा में पाया गया कि

कपास की लोई से बीज निकालने के दौरान विद्यार्थी और शिक्षक यह ध्यान रखते हैं कि एक भी तिनका बीज के साथ न निकले। एक शिक्षिका ने बताया कि सातवीं कक्षा में पशुपालन की चर्चा की जा रही थी, उसी सप्ताह यह सूचना मिली कि ताई की गाय बच्चा जनने वाली है। सभी बच्चे उस अध्यापक के साथ गाय और उसके बच्चे को देखने गए। शिक्षिका ने बताया कि बच्चों के बीच यह बहस हुई कि गाय ने लड़के को जन्म दिया था या लड़की को और उसके बच्चे का नाम क्या रखा जाए।

जीवन के लिए जीवन द्वारा शिक्षा

नयी तालीम की एक महत्वपूर्ण मान्यता है कि जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान जीवन से हासिल किया जाए। इस मान्यता को दो हिस्सों में तोड़कर देखते हैं—प्रथम, जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान, जिसे विद्यार्थी उद्योग व दस्तकारी जैसी कुशलताओं के माध्यम से स्वावलंबन, समानता और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्यों के साथ सीखते हैं। वे किसी कृत्रिम परिवेश में उपदेश हासिल न करके, बल्कि जीवन की समीक्षा करते हैं। यह समीक्षा प्रत्यक्ष अनुभव और सहभागिता के द्वारा प्रकृति, समाज और व्यक्ति के संबंध को परखने से आती है। नयी तालीम के सदंर्भ में यह कहना कि प्रत्यक्ष कार्य के ज़रिये ज्ञान देना सरल है—एक अधूरी व्याख्या है। वस्तुत: यह एक नयी चुनौती खड़ी करती है कि प्रत्यक्ष अनुभव और क्रियाकलाप को अमूर्त सिद्धांतों से कैसे जोड़ा जाए, कैसे वह दृष्टि विकसित की जाए जो भाषा, विचार और अनुभव के संबंध को मज़बूत करे। इस संदर्भ में नयी तालीम के जो साहित्य उपलब्ध हैं वे कताई और अन्य विषयों के संबंध की चर्चा करते हैं। मैंने अवलोकन के दौरान देखा कि विद्यार्थियों के रोज़मर्रा की अनेक गतिविधियाँ विद्यालय में सीखने-सिखाने का साधन थीं। परिवार, समुदाय और दोस्तों के समूह के साथ वे जो करते हैं, उन्हें विद्यालय में सीखने का संसाधन बनाया जाता है। खेती-कार्य के दौरान इसके उदाहरण देखें। विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी क्यारी की निराई की। इसके बाद इन सभी विद्यार्थियों को शिक्षक ने खेत के किनारे इकट्ठा किया और बोयी जाने वाली फ़सल का उदाहरण लेते हुए कंदवर्गीय और बेलवर्गीय फ़सलों की संकल्पना को समझाया। इस चर्चा में एक औपचारिक कक्षा की तरह इन फ़सलों के पोस्टर या चार्ट तो नहीं थे, लेकिन बच्चों के पास इन फ़सलों के अनेक उदाहरण थे, जिन्हें विद्यार्थी खेत में ही खोज रहे थे। हल्दी की सफ़ाई के दौरान विद्यार्थी केवल यंत्रवत अभ्यास नहीं कर रहे थे। शिक्षक उन्हें यह भी समझा रहे थे कि हल्दी की गांठ जड़ न होकर तना है। इसकी तुलना उन्होंने आलू, प्याज़, अदरक और लहसुन से की।

विद्यालय और विद्यालय के बाहर की दुनिया के जिस अंतर को पाटने की पैरवी प्राय: की जाती है, उसकी पहल आनंद निकेतन की प्रार्थना सभा में देखने को मिली। अन्य विद्यालयों की तरह प्रार्थना, संबोधन और सूचना के अतिरिक्त विशिष्ट यह था कि प्रात:कालीन सभा केवल कक्षा और विषय को सीखने की गतिविधियों से संबंधित नहीं करती। इसमें सूचना दी गई कि बैठक व्यवस्था, रसोई और कार्यानुभव से संबंधित दैनिक चक्र का स्वरूप क्या होगा। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालय विषय ज्ञान

को सिखाने वाली इकाई न होकर एक ऐसी इकाई है जहाँ वे गतिविधियाँ की जाती हैं जो किसी परिवार या समुदाय में होती हैं। इस तरह से विद्यालय का दैनिक चक्र, विद्यालय के बाहर परिवार और समुदाय के दैनिक चक्र के साथ संबद्ध हो जाता है। यह संबद्धता 'पढ़े-लिखे' की रूढ़ छवि को तोड़ने का माध्यम बनती है। विद्यार्थी केवल लिखने-पढ़ने का कार्य नहीं करते, वे शिक्षकों के साथ विद्यालय का प्रबंधन वैसे ही करते हैं, जैसे किसी संस्था या व्यवस्था का संचालन होता है। रसोई के कार्य में विद्यार्थी अपने रोज़मर्रा के ज्ञान का प्रयोग करते हैं, लेकिन वे संतुलित आहार, बाज़ार की कीमतों, वस्तुओं के प्रयोग के अनुपात का भी अभ्यास करते हैं। इसी तरह कताई के दौरान वे कपास को कातने के साथ मापन का कार्य सीखते हैं। विद्यालय, घर और समुदाय जैसा लगता है। उनके टहलने, खेलने, खाने और बातचीत करने पर कोई अनुशासन का पहरा नहीं था। विद्यार्थी छुट्टी के बाद रुकने से हिचकते नहीं और समय से पूर्व विद्यालय आने को उतावले रहते हैं।

आनंद निकेतन में हस्तशिल्प के माध्यम से लोककला, संगीत, अन्य प्रदर्शनकारी कलाएँ औपचारिक शिक्षा में केंद्रीय स्थान प्राप्त करती हैं। संगीत की कक्षा में देखा गया कि विद्यार्थी गुरुजी की सीख को केवल दुहरा नहीं रहे थे, बल्कि गुरुजी उन्हें अनुपात, आवृत्ति और आरोह-अवरोह से परिचित करा रहे थे। इसी तरह लिफ़ाफ़ा बनाना सीखने के दौरान आकृति का परिमाप, लिफ़ाफ़े की कलात्मकता को बढ़ा रहा था। रंग निर्माण के दौरान चुकंदर एवं पालक के पानी का उपयोग केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि कला और विज्ञान का अद्भुत संयोजन थी। धीरेन्द्र मजूमदार (2005) ने सही पहचाना है कि नयी तालीम में न तो प्योर साइंस है और न ही अप्लाइड साइंस, बल्कि यह एक रिक्वायर्ड साइंस है।

सशक्त शिक्षक

नयी तालीम शिक्षक की विश्वदृष्टि और शिक्षण पद्धति में अलगाव को समाप्त करती है। प्राय: 'शिक्षक-विश्वास' के संप्रत्यय द्वारा शिक्षक की विश्वदृष्टि की व्याख्या की जाती है। जैसा कि आनंद निकेतन विद्यालय में देखा गया और शिक्षकों के साक्षात्कार से प्रकट हुआ कि शिक्षक श्रम, अनुभव, समानता, पंथ निरपेक्षता के प्रति गाँधीवादी नज़रिए को अपनाते हैं और शिक्षण में उसे उतारते हैं। अपनाने और उतारने में समानता, ज्ञान और अभ्यास के बीच दूरी को कम करते हैं। वस्तुत: शिक्षक अपनी जिज्ञासा और बच्चे की जिज्ञासा के बीच समन्वय करके ज्ञान का निर्माण करते हैं।

प्राय: शिक्षक को एक कर्मचारी की हैसियत से उसके वेतन के सापेक्ष देखा जाता है। नयी तालीम विद्यालय के एक शिक्षक ने इस संदर्भ को एक अन्य दृष्टि प्रस्तुत की। इस शिक्षक ने आनंद निकेतन विद्यालय के पूर्व वर्धा ज़िले के एक 'कॉन्वेंट विद्यालय' में अध्यापन कार्य किया था। आनंद निकेतन में कार्य करते हुए उन्हें अकोला के निजी विद्यालय से अधिक वेतन पर कार्य करने का अवसर आया। वे बताते हैं कि जो 'संतुष्टि' उन्हें आनंद निकेतन में मिलती है, वह धन से नहीं आंकी जा सकती। 'संतुष्टि' को परिभाषित करते हुए उन्होंने

निम्नलिखित संकेतक बताए—काम करने की आज़ादी, नया सोचने का मौका, समाज से जुड़ने का अवसर और जीवन दृष्टि में बदलाव। उन्होंने बताया कि आनंद निकेतन के अनुभव उनके निजी जीवन में भी समानता के मूल्यों के लिए प्रेरक बनें, उनमें सहिष्णुता आई। इन मूल्यों के जीवन में प्रकट होने के संदर्भ में उन्होंने एक उदाहरण साझा किया। उनके स्थानीय समुदाय में अंबेडकर जयंती को मनाने के संदर्भ में विवाद था। इस बारे में उनका दृष्टिकोण पूर्व के वर्षों में उग्र था। आनंद निकेतन के अनुभव से जाना कि कैसे सकारात्मक विरोध करें। तब उन्होंने विरोध कर रहे समूह से उग्र मुकाबला करने के बजाय शांतिपूर्ण तरीके से समुदाय में अंबेडकर के मूल्यों पर चर्चा करने का रास्ता चुना।

विज्ञान विषय की एक शिक्षिका ने विद्यालय की निर्णय प्रक्रिया को अपने सशक्तिकरण के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि उन्हें आनंद निकेतन में आए अधिक समय नहीं हुआ है, लेकिन जिस तरीके से विद्यालय के निर्णयों में उन्हें अपनी बातें रखने के लिए आमंत्रित किया जाता है, उससे उनमें यह आत्मविश्वास आया है कि वे नए विचारों को रखें और जिससे असहमत हैं, उन पर भी टिप्पणी करें। इस शिक्षिका ने एक और महत्वपूर्ण अनुभव का उल्लेख किया कि विद्यालय में सीखी निर्णय प्रक्रिया की विधि को वे अपने परिवार के सदस्यों खासकर छोटे भाई-बहन के साथ कार्यान्वयन करने लगी हैं।

विद्यालय में यह भी देखने को मिला कि यहाँ 'सीनियर', 'जूनियर', 'गणित के अध्यापक' और 'विज्ञान के अध्यापक' जैसी पदानुक्रमिक श्रेणियाँ नहीं हैं। सभी विद्यालय के संचालन और दायित्व निर्वहन में बराबर के भागीदार हैं। रसोई, सफ़ाई, शौचालय की सफ़ाई, परिसर की व्यवस्था, हिसाब-किताब में हिस्सा लेते हैं। गणित की शिक्षिका भी बच्चों के साथ खेत में साग के बंडल बनाती हैं। कताई के अध्यापक बच्चों को गणित सिखाते हैं। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका प्राइमरी की कक्षाओं में अंग्रेज़ी पढ़ाती हैं। यह देखने को मिला कि प्रात:कालीन सभा से पूर्व कक्षा के बाहर विद्यार्थियों की चप्पलें अव्यवस्थित रखी थीं। बिना बच्चों को डांटे-डपटे शिक्षक ने ही इसे व्यवस्थित किया।

विद्यालय की निर्णय प्रक्रिया लोकतांत्रिक है। इसके योजनाबद्ध संचालन के लिए हर शनिवार और बुधवार को बैठक होती है। इन बैठकों में पिछली योजना की समीक्षा और आगामी सप्ताह के लिए योजनाओं का विकास किया जाता है। इस दौरान विद्यालय स्तर की गतिविधियों, कक्षा स्तर की गतिविधियों, शिक्षण पद्धति और रचनात्मक कार्यों के आयोजन के बारे में निर्णय लिए जाते हैं। इसी तरह की निर्णय प्रक्रिया में बच्चों को शामिल करने के लिए बाल सभा का आयोजन होता है। इस आयोजन में बच्चे विद्यालय की गतिविधियों के बारे में अपनी राय रखते हैं।

विद्यार्थियों के अनुभव

विद्यार्थियों ने शिक्षक के साथ अपने संबंध की विशिष्टता को व्यक्त करते हुए बताया कि वे अपने अध्यापकों को भाऊ, ताई, भैया, दीदी पुकार सकते हैं। पूछे जाने पर विद्यार्थियों का तर्क था कि 'सर' और 'मैडम' केवल पढ़ाते हैं, ये दीदी और भैया

की तरह हर काम करते हैं। हर काम की व्याख्या करते हुए बताया कि हमारे साथ खेत में काम करते हैं, गाते हैं, खेलते हैं, भोजन पकाते हैं। विद्यार्थियों के विचार शिक्षक-विद्यार्थी के संबंध में निजता को एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में स्थान देते हैं। चर्चा के दौरान एक विद्यार्थी ने कहा कि उसे अपने विद्यालय में डर नहीं लगता। विद्यालय के साथ डर के प्रयोग को उस विद्यार्थी ने अपने पड़ोस के लड़के के उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया। उसका दोस्त परीक्षा के भय, पी.टी. के भय के कारण कई बार स्कूल नहीं जाना चाहता, लेकिन वह अपने विद्यालय (आनंद निकेतन) हर रोज़ आना चाहता है। विद्यार्थियों के एक समूह से पूछा गया कि वे विद्यालय का कोई एक प्रभाव बताएँ जो उनके रोज़मर्रा की ज़िंदगी में दिखता हो। कुछ इस प्रकार के विचार सामने आए —

'पहले मैं घर जाकर जूते को कूलर के ऊपर रख देता था, बैग और कपड़े मम्मी को संभालने के लिए छोड़ देता था। जब स्कूल में देखा कि सभी के जूते, चप्पल एक लाइन में रखे जाते हैं, तो मैंने अपने घर में दरवाज़े के बगल वाली दीवार के पास वैसे ही सबके जूते, चप्पल रखना शुरू कर दिया।'

'पहले मुझे बर्तन साफ़ करना, खेत में काम करने में मज़ा नहीं आता था, अब घर पर मैं इन कामों में रुचि लेता हूँ।'

'छुट्टी के दिन खाली समय में मैं स्कूल की प्रार्थना को घर पर दुहराता हूँ। चलते चलो और चलते चलो, लहरों के लपेटों में पलते चलो...'

मुक्त अनुशासन और भय की दृष्टि से देखने पर आनंद निकेतन में एक आत्मानुशासित और भयमुक्त माहौल मिलता है। क्षेत्र कार्य के प्रथम दिन एक विद्यार्थी एक वयस्क को लिपट कर चल रहा था। दोनों एक-दूसरे को खींच रहे थे। इस दृश्य को देखकर लगा कि वह व्यक्ति अभिभावक होगा। साथ खड़े एक अन्य विद्यार्थी ने बताया कि वह वयस्क शिक्षक है। शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध में निकटता का यह अवलोकन सत्ता-जनित भय से मुक्त परिसर का प्रमाण है। इसी तरह, विद्यालय के किसी शिक्षक या प्रधानाचार्य को देखकर विद्यार्थी या कोई अन्य सदस्य असहज नहीं होता है। वे अपना स्वाभाविक कार्य करते रहते हैं। शिक्षक और प्रधानाचार्य की ओर से भी अनुशासन के संदर्भ में कोई 'आदेश' देते नहीं पाया गया। क्षेत्र कार्य के दौरान एक भी उदाहरण देखने को नहीं मिला, जहाँ कि विद्यार्थियों और शिक्षकों को निर्देश देते हुए नकारात्मक वाक्यों का प्रयोग किया गया हो। यह भी देखने को मिला कि कोई विद्यार्थी भंडार कक्ष, कंप्यूटर प्रयोगशाला, प्रधानाध्यापिका के कक्ष आदि स्थानों पर जा सकता है। इन स्थानों पर विद्यार्थियों का असमय और बिना अनुमति के प्रवेश को अस्वाभाविक नहीं माना जाता। कक्षा 3 में गणित पढ़ाया जा रहा था। इस दौरान एक बच्चे ने कहा कि मुझे भूख लगी है। दीदी ने बाकी बच्चों से भी पूछा। कक्षा ने फ़ैसला किया कि पहले वे भोजन करेंगे, फिर पढ़ेंगे। बच्चों के साथ दीदी ने भी अपना टिफ़िन खोला।

गाँधीवादी मूल्यों के आत्मसात्मीकरण का उदाहरण कक्षा 9 में मासिक टेस्ट के दौरान देखने को मिला। इस कक्षा में परीक्षा के दौरान कोई कक्ष

निरीक्षक नहीं था, लेकिन परीक्षा की शुचिता कायम थी। इसी के समांतर एक अन्य उदाहरण है— कक्षा 10 के विद्यार्थी दूसरे विद्यालय में बोर्ड की परीक्षा दे रहे थे, वहाँ अन्य विद्यालयों के विद्यार्थी भी थे। जब बाकी के विद्यार्थी नकल करने के लिए उतावले थे तो आनंद निकेतन के विद्यार्थियों ने असहमति जताई। अगले दिन जबरन इनकी उत्तर पुस्तिका से नकल करने की कोशिश की गई तो आनंद निकेतन के विद्यार्थी अपनी प्राचार्या से मिले और मदद माँगी। यह घटना प्रमाण है कि विद्यार्थियों ने जिन मूल्यों को सीखा है, वे उनके व्यवहार का अभिन्न हिस्सा हैं।

''तेरा बच्चा वहाँ (आनंद निकेतन) पढ़ता है फिर भी होशियार है।''

यह कथन एक अभिभावक का है जो विद्यालय की छुट्टी के बाद अपने बच्चे को लेने आए थे। इस अभिभावक ने विद्यालय के संबंध में स्थानीय समुदाय के पूर्वाग्रह पर चर्चा की। उसने बताया कि उसके साथी ऐसा मानते हैं कि आय कम होने के कारण वह अपने बच्चे को आनंद निकेतन पढ़ने के लिए भेजता है। जबकि अभिभावक ने बताया कि वह अपने बच्चे को गाँधी जैसा इनसान बनाने के लिए आनंद निकेतन में भेजता है। उसके साथी जो विद्यालय की पास वाली सड़क से गुज़रते हैं, कई बार व्यंग्य कसते हैं कि 'तू अपने बच्चे को कारखाने भेजता है या स्कूल।' उन्हीं में जब एक साथी एक दिन उनके घर आया और जब उसने बच्चे को अँग्रेज़ी पढ़ते देखा तो उसका कथन था कि तेरा बच्चा होशियार है। इस अभिभावक ने गाँधी जैसे इनसान की अग्रलिखित विशेषताएँ बताईं—

'प्रतिस्पर्धा का दौर है, हम बच्चों को सिखाते हैं कि स्पर्धा करें, कोई तुझसे आगे नहीं जाए। इससे (बच्चों के बीच) दोस्ती टूट जाती है। इस स्कूल के बच्चों में ऐसी भावना नहीं है। वे समूह में रहना और सीखना चाहते हैं और अपने आप से प्रतिस्पर्धा करते हैं।'

निष्कर्ष

सेवा-पूर्व शिक्षकों के समूह के साथ विद्यालय की प्रधानाचार्या जब चर्चा कर रही थीं तो मैंने आनंद निकेतन के लिए 'वैकल्पिक विद्यालय' शब्द का प्रयोग किया। इस शब्द के प्रयोग पर प्रधानाचार्या की प्रतिक्रिया थी कि 'हम तो वह सब कार्य कर रहे हैं जिसे करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005 में कहा गया है तो हम कैसे वैकल्पिक विद्यालय हुए?' आपका यह जवाब विद्यालय और समाज के संबंध के बारे में आनंद निकेतन की अद्वितीयता को प्रकट करता है। समाज के लिए विद्यालय की भूमिका के जिस मॉडल को आनंद निकेतन चरितार्थ कर रहा है, उसके मूल में संवैधानिक मूल्य निहित हैं। इस दावे को कहना जितना आसान है, उसे विद्यालय की दिनचर्या और शिक्षण पद्धति का हिस्सा बनाना उतना ही कठिन है। यह पाया गया कि आनंद निकेतन ने अपने स्वाभाविक विकास क्रम में इन मूल्यों को अपनाया है। हालाँकि, नयी तालीम के मूल दस्तावेज़ में इनका कोई प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन नयी तालीम के सिद्धांतों को विश्लेषित करने पर आप पाएँगे कि यह व्यवस्था समतामूलक और न्याय आधारित समाज की स्थापना को अपना आदर्श मानती है। इस आदर्श को कार्यान्वित करने

के लिए आनंद निकेतन विद्यालय औपचारिक शिक्षा की प्रचलित ज्ञान संरचना विषय में विभाजन, अध्ययन-परीक्षा चक्र और पद्धति के बदले सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में स्थापित ज्ञान, कुशलता और पद्धति को चुनता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह विभिन्न ज्ञानानुशासनों में विकसित और निर्मित ज्ञान व विधियों को अस्वीकार करता है, बल्कि इस स्तर तक पहुँचने की शुरुआत परिवेश से होती है, जहाँ सीखने वाला एक स्वावलंबी और स्वतंत्र चिंतक है, जो न केवल विचार को सीखने का माध्यम और मूल मानता है, बल्कि वह पदार्थ (परिवेश) के साथ अपने संबंध को विश्लेषित करने के नज़रिए का विकास करता है।

दयालचंद्र सोनी (2012) बुनियादी शिक्षा की 'बुनियाद' की व्याख्या तीन रूपों में करते हैं। प्रथम, इसकी बुनियाद सामुदायिक गतिविधियों में है। द्वितीय, गाँधीवादी विचारधारा पर आधारित होने के कारण इसकी वैचारिक बुनियाद है। तृतीय, यह मानव जीवन की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करती है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण नयी तालीम संगठित बनाम असंगठित, शिक्षित बनाम अशिक्षित, औपचारिक बनाम अनौपचारिक, शहरी बनाम ग्रामीण, रोज़गार बनाम बेराज़गार की कुछ दुविधाओं, शिक्षित और अशिक्षित होने के दो ध्रुवों और योग्यताओं के रूप न परिभाषित करके इनके संदर्भ में एक भारतीय जीवन दृष्टि का उद्घाटन करती है। नयी तालीम बाल-केंद्रित शिक्षा को केवल कक्षा और विद्यालय के संदर्भ में परिभाषित ही नहीं करती बल्कि इसके द्वारा विद्यार्थी विद्यालय परिसर में भी समुदाय की गतिविधियों से जुड़ा रहता है। उसकी सृजनात्मकता का विकास स्वाभाविक रूप से होता है। इसकी गतिविधियाँ केवल अर्थाजन के लिए उपयोगी नहीं हैं, बल्कि सोद्देश्य, सृजनात्मक और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी हैं।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 1993. मोहनदास करमचंद गाँधी (1869–1948). *प्रोसपेक्ट्स — द क्वाटरली व्यू ऑफ़ एजुकेशन*. वॉल्यूम 23, अंक 3/4, पृ. 507–17. यूनेस्को–इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ़ एजुकेशन, पेरिस.

गाँधी, एम. 1938. *बेसिक नेशनल एजुकेशन*.

डी.सी.सोनी. 2005. *नई तालीम की बुनियाद*. नई तालीम समिति, सेवाग्राम.

शिवदत्त. 2012. *नई तालीम —एक विहंगावलोकन*. नई तालीम समिति, सेवाग्राम.

साइकस, एम. 1993. *नई तालीम की कहानी*. नई तालीम समिति, सेवाग्राम.